

## Osho in Indian Media

Osho is published well over 1000 times a year in different Indian publications, some with huge readerships.

“India is the biggest newspaper market in the world – over 100 million copies are sold each day.”

[https://en.wikipedia.org/wiki/Media\\_of\\_India](https://en.wikipedia.org/wiki/Media_of_India)

Hindi remains the most popular language for physical publications and *Dainik Jagran* tops the chart with a readership of over 16.6 million. *Hindustan* (14.7m) and *Dainik Bhaskar* (13.8m). Ibid.

*The Times of India* is said to be the most read English newspaper worldwide, with a readership of close to 7.6 million, double that of *USA Today* for example. Ibid.

Newspapers and magazines are published in 21 other languages. Ibid.

A 2014 survey of sales by Media Research Users Council of India's top 20 newspapers reveals Hindi and English taking 56.6% of readership. The balance of readership goes to 7 other languages.

[https://en.wikipedia.org/wiki/List\\_of\\_newspapers\\_in\\_India\\_by\\_readership](https://en.wikipedia.org/wiki/List_of_newspapers_in_India_by_readership)



Pictured right is a sample of 14 Hindi and English only press clippings of articles by or about Osho collected by Media Clipping Bureau over an 8-day period.

Pictured above right are storage trunks full of archived press clippings.



The following pages have full or part page scans from the Indian Media – with the title and language of source. Explanation of content included, and where available, the circulation.

Article by Osho: "Change is the unchanging factor of this world." Hindustan, one of the largest Hindi newspapers. Readership: 3.8 million.

09 हिन्दुस्तान  
नई दिल्ली • मंगलवार • 05 जनवरी 2016

"नरः शुभ न पन्थाम।" अथात् मनुष्य शुभ न क लिए सन्तान्तरण पर चलते है। - ऋग्वेद

# यह जगत है परिवर्तन का

बुद्ध कहते हैं कि प्रत्येक चीज बसव है, बदल रही है, क्षणमंशुर है। और यह बात प्रत्येक व्यक्ति को जान लेनी चाहिए। बुद्ध का सास जोर इसी एक बात पर है; उनकी पूरी दृष्टि इसी बात पर आधारित है। वे कहते हैं कि यह सतत स्मरण रहे कि सब परिवर्तन ही परिवर्तन है।



**तु**म एक पेशा दिखाने देता है, बहुत सुंदर है। और जब तुम उस सुंदर रूप को देखते हो तो भाव होता है कि यह रूप सदा ही ऐसा रहेगा। इस बात को ठीक से ध्यान रख लो। ऐसे अनेक कभी मत करो कि यह सौंदर्य हमेशा होगा। और अगर तुम जानते हो कि यह रूप केही से बदल रहा है, कि यह हम क्षण सुंदर है और अगले क्षण कुत्तर हो जा सकता है तो फिर अस्मित किसे पैदा होवे? अंतर्भाव है।

### जब वर्ष पर विरोध



ओशो

एक शरीर को देखो, वह जीवित है, अगले क्षण वह मृत हो सकता है। अगर तुम परिवर्तन को समझे तो सब स्पष्ट है। बुद्ध ने अपना सन्तान्तरण 'सिद्धि' दिया, परिवार छोड़ दिया,

बच्चा एक न एक दिन मा जाएगा। बच्चे का जन्म उसी रात हुआ था, जिस रात बुद्ध ने पहला छोड़ा। उसके जन्म के कुछ घंटे ही हुए थे। बुद्ध उसे भीतरीय बाट देकरने के लिए अपनी पानी के कपड़े में लप। पानी को पीठ परकाने को लगनी और वह बच्चे को अपने खों में लेकर छोड़ें था। बुद्ध ने अस्मितया कहना पड़ा, लेकिन वे शिष्टकः उनसेने कहा, 'बच्चा प्रकृतम है?' एक क्षण उनके मन में यह विचार चौंका और कहा- 'बच्चा प्रकृतम है? सब तो बदल रहा है। आज बच्चा पैदा हुआ है, कल वह योग। एक दिन पहले वह नहीं था, अभी वह है, और एक दिन फिर नहीं हो जाएगा। तो क्या प्रकृतम है? सब कुछ तो बदल रहा है।' वे मुझे और विचल हो गए।

जब किसी ने पूछा कि आपने क्यों सब कुछ छोड़ दिया? तो बुद्ध ने कहा- 'मैं इसको खोज में हूँ, जो कभी नहीं बदलता, जो सततमा

में से इसको खोज कर रहा हूँ, जो कभी नहीं बदलता, जो निरप है। अगर कुछ सततक है तो ही जीवन में अर्थ है, जीवन में मूल्य है, अन्तम सब अर्थ है।' बुद्ध की समस्त देनामा का आधार परिवर्तन था। वह मृत सुंदर है। वह मृत कहता है- 'परिवर्तन के द्वारा परिवर्तन को विनिर्मित करो।' बुद्ध कभी दूसरा किल्ला नहीं बनते, वह दुःख विरक्त बुधियादी रूप से तन से अर्थ है। बुद्ध इसका ही कर्म है कि सब कुछ परिवर्तनशील है। इसे अक्षुण्ण करो। फिर तुम्हें अस्मित नहीं होवे। और जब अस्मित नहीं होवे तो फिर-फिर जीवन को छोड़ने-छोड़ने तुम अपने केंद्र पर पहुँच जाओगे, उस केंद्र पर आ जाओगे, जो विरक्त है, शांतता है। परिवर्तन को छोड़ने जाओ, तुम अस्मितवर्तन पर, केंद्र पर, चक्र के केंद्र पर पहुँच जाओगे।

इसलिए बुद्ध ने चक्र को अपने धर्म का प्रतीक बनाया, क्योंकि चक्र चलता रहता है, लेकिन उसकी धुरी, जिसके सहारे चक्र घलता है, रुकी जाती है, स्थायी है। जो संसार चक्र की धुरी चलता रहता है, तुम्हारा व्यक्तिगत चक्र भी धुरी बदलता रहता है, और तुम्हारा अंतमसततम अचल धुरी बन रहता है, जिसके

को विनिर्मित करो।' तंत्र कहता है कि जो परिवर्तनशील है, उसे छोड़ो मत, उसने उल्टे, उसने जाओ। उसमें आसक्त मत होओ, लेकिन उसमें जाओ, उसे जीओ। हरक क्या है? उसमें जाओ, उसे जी लो। उसे परित्यक्त होने दो और तुम उसमें रह कर जाओ। उसे उल्टे-उल्टे ही विनिर्मित करो। इसे मत, भवते मत। भाग कर कहां जाओगे? इससे बचोगे कैसे? सब जगत् तो परिवर्तन है। तंत्र कहता है, बदलावत सब जगत् है। तुम भाग कर कहां जाओगे? कहां जा सकते हो? जहां भी जाओगे, वहां बदलावत ही मिलेगी।

सब पाठना अर्थ है, सबने को कौशल ही मत करो। सब करता क्या है? अस्मितमा मत निर्मित करो। जीवन परिवर्तन है, तुम परिवर्तन से जाओ। उसके साथ कोई संघर्ष मत करण करो। उसके साथ बहो। नदी बह रही है, उसके साथ बहो। नदी भी मत, नदी को ही तुम्हें ले जाने दो। उसके साथ लड़ो मत, उसमें लड़ने से अपना स्वभाव भंग होगा। विरक्तम में रहो, और जो होता है, उसे होने दो। नदी के साथ बहो। इससे क्या होता? अगर तुम नदी के साथ बिसा संघर्ष किए सब धर्म, बिना किसी शर्त के सब

कर इसका प्रयोग करो। नदी में उल्टे, विरक्तमपूर्ण रहो और अपने को नदी के हाथों में छोड़ दो; उसे तुम्हें बहा ले जाने दो। लड़ो मत, नदी के साथ एक ही जाओ। एक अध्यात्मक तुम्हें अक्षुण्ण होय कि चर्चे लक्ष नदी है, लेकिन मैं नहीं बर्बा हूँ।

परि नदी में लड़ोगे तो तुम बहा बल लुप्त हो सकते हो। इसीलिए तंत्र कहता है- 'परिवर्तन से परिवर्तन को विनिर्मित करो।' लड़ो नहीं, लड़ने को कोई अस्मित नहीं है, क्योंकि परिवर्तन तुम्हें प्रकृत नहीं कर सकता। लड़ो नहीं, संसार में लो। इसे मत, क्योंकि संसार तुम्हें प्रकृत नहीं कर सकता। उसे जीओ। कोई चुनस मत करो।

वे तंत्र के लीन हैं। एक वे हैं, जो परिवर्तन के जगत् से विरक्त होते हैं और एक वे हैं, जो उसमें भाग जाते हैं। लेकिन तंत्र कहता है कि जगत् परिवर्तन है, इसलिए उसमें विरक्तता नहीं उससे धारणा लेने अर्थ है। बुद्ध कहते हैं- 'इस परिवर्तनशील में रहने से क्या प्रयोजन है?' और तंत्र कहता है- 'इसमें भावने का सब प्रयोजन है?' दोनों अर्थ हैं। उसे बदलते रहते दो; तुम्हें उससे कुछ लेना-देना नहीं है। सब

Article about Osho.

*Indian Express*, a national English daily.

Circulation of 360,000 and readership: 1.8 million.

## East comes to Osho: Chinese, Koreans, Japanese are new visitors

SUNANDA MEHTA  
PUNE, JANUARY 16

PAGE ONE  
ANCHOR

WHEN JANE decided to visit the Osho Meditation Resort in Pune last year, it was one of the few times the 32-year-old mother of two had ventured out of China on her own. But this year, on her second visit to the place, she is convinced that this will be an annual ritual for her.

It is the second visit for Angie, 30, from Hong Kong, too. A psychotherapist, she says Osho's unique method of combining meditation with self-develop-

ment has given her the answers that she was seeking. She too promises to be back.

Although the meditation resort, earlier known as Rajneesh ashram and then as Osbo Commune, sees many foreigners — the international community accounts for 38 per cent of its visitors — the visitors' profile has seen a gradual change over the last few years. While it was earlier known to attract Americans

and Europeans (mostly Germans and Italians), it is now playing host to a significant number of visitors from the East, including China, Japan and Korea.

"It's a trend that began about three-four years ago. Slowly and steadily, we are seeing a conspicuous presence of visitors from these countries. The reason is simple. China, Japan and Korea have, of late, seen the kind of wealth that only the West had earlier. This had two consequences. One, they have realised that wealth does not necessarily translate into happiness. Two, their affluence has enabled them

to travel and seek spirituality. Because you need a certain degree of affluence to be able to afford to leave work and come to a place like Osho's," says Sudheer, 65, an expert in sound technology who lives in Amsterdam but travels around the world holding workshops on Osho's teachings.

According to Ma Amrit Sadhana, spokesperson of the resort, the influx from the East as well as places like Russia and Israel is also linked to the promotion of Osho books and DVDs in these countries.

"Osho is probably the most



Thirty-eight per cent visitors are foreigners

published person in the world. His books have been translated into many languages that include Chinese, Japanese, Russian and Spanish. This gives them a taste of what he preached, and then they want to come here to get the complete experience," says Vafayan, 66, a retired teacher from Germany.

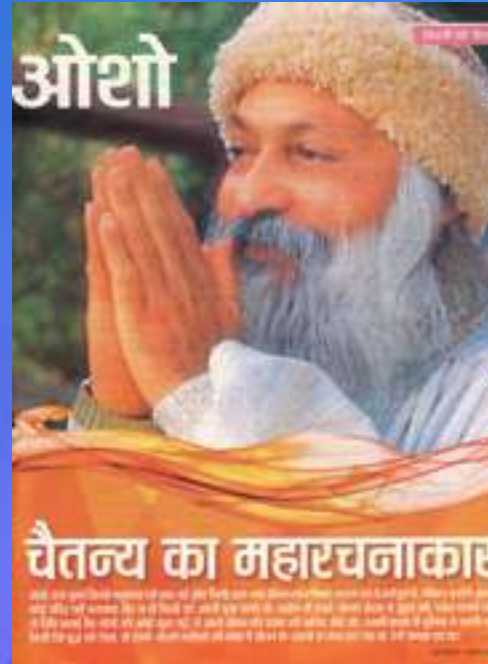
She, however, points out that the number of German followers has not declined. The only difference is that many now follow Osho's preachings online.

"There are 4.5 million fans of Osho on Facebook in 13 languages. Besides English, the top

language pages on Facebook are Spanish, Hindi, Turkish and German. iOSHO, an online subscription programme offering Osho meditation to anyone, anytime, anywhere has also made a huge impact," says Anil, a chartered accountant who looks after the digital world of the meditation resort.

"In China, Vietnam, Russia, the first thing that appeals to people is the switch from God to godliness. Most of them have rarely travelled outside their country, and once they hear about Osho, they try and visit the resort," he says.

Article about Osho: “Osho: the greatest creator of consciousness.”  
*Aha Jindagi*, a national Hindi magazine.  
Circulation: 210,000 and readership: 630,000.



Article by Osho.

*The Times of India*, a national English daily.

Circulation: 3,049,920 and readership of close to: 7.6 million.



# KNOW YOUR ONIONS

OSHO says what to eat and what not to eat are false problems we create that can easily be solved, but sorting out who you really are, is far more daunting

**S**eeker: So many dishes in the kitchen of the meditation resort contain onions. Remembering that Ramana Maharshi said to avoid chillies, excess of salt, and onions, I am struck with the question: Is the kitchen sabotaging our possibilities of enlightenment?

**Osho:** That's my whole work here — to sabotage all your possibilities of enlightenment. If your desire for enlightenment is not sabotaged, you will never become enlightened. But don't be angry at poor onions, they are innocent. If a man of the understanding of Ramana Ma-

harse understands, you will need great awareness. Only in the fire of awareness can real problems be burned.

You know you cannot solve those real problems. So the best way is, create bogus problems and start solving them. This is one of the most basic tricks of the human mind.

Now see into it. How can onions prevent you becoming meditative?



THE  
SPEAKING  
TREE

How can onions prevent you from becoming silent? There is no problem there. But you want to be spiritual and you want to be known as spiritual, you start doing foolish things....

Remember, anything that prevents you

once a day, how to eat without salt, how to eat without ghee, how to eat this way or that way. Jaina monks eat standing. If you eat sitting, enlightenment is sabotaged. Jaina monks eat only once a day. If you eat twice, enlightenment is sabotaged.

Don't bring irrelevancies into your spirituality. Otherwise you will become obsessed with fads. And those fads are a kind of insanity, psychosis.

People just become faddists. And it simply shows some neurosis, some psy-

chopathology is in it.

I would not like you to become a mahatma. If you can become simple innocent human beings, that is more than is required. Eat whatsoever feels good to you. Take care of the body, be respectful of the body. Be respectful how much you eat, don't overburden the body, because that is a kind of anger, violence. And violence is so subtle that you have to watch it.

When a person goes on stuffing himself, he is being violent with his own body, he is destructive. Or he can go on a fast, then again he is violent. Just see the point of it. You can eat too much and you can be violent, and you can fast and you can be violent. Eating or fasting is not the question: Don't be violent.

REMEMBER, ANYTHING THAT  
PREVENTS YOU FROM  
BECOMING ENLIGHTENED IS

Article by Osho: "Compassion is the purest form of love."  
*Aaj Samaj*, a Hindi daily.  
 Readership over: 1.3 million.

## धर्म समाज

नई दिल्ली, रवि

# करुणा प्रेम का शुद्धतम रूप है

करुणा क्या है? करुणा प्रेम का शुद्धतम रूप है। काम-वासना प्रेम का निम्नतम रूप है, करुणा प्रेम का उच्चतम रूप है। काम-वासना में संपर्क मूलतः शारीरिक होता है, करुणा में संपर्क मूलतः आध्यात्मिक होता है। प्रेम में करुणा और काम-वासना, दोनों का समावेश होता है, शारीरिक और आध्यात्मिक, दोनों का मिश्रण होता है।



ओशो

**के** खल करुणा ही स्वास्थ्य प्रदान करती है। क्योंकि मनुष्य में जो भी अस्वस्थ है वह प्रेम की कमी के कारण है। जो भी मनुष्य के साथ चलता है, वही न कहीं प्रेम से जुड़ा है। वह प्रेम नहीं कर पाया, या उसे प्रेम नहीं मिल पाया। वह स्वयं को चोट नहीं पाया। सारी व्याधा यह है। इस कारण भीतर बहुत सी संघर्षाएं बन गई हैं।

भीतर के यह घाव कई रास्तों से सतह पर आ जाते हैं, वह शारीरिक रोग



बदल नहीं सकती, विकसित नहीं हो सकती। एक व्यक्ति वैसा ही कभी नहीं रहता। वह वापस लौट सकता है, आगे बढ़ सकता है, नरक जा सकता है, स्वर्ग जा सकता है लेकिन वहीं नहीं रह सकता। वह चलता रहता है, इस ओर या उस ओर।

जब तुम्हारे किसी के साथ यौन-संबन्ध होते हैं तो तुमने उसे एक वस्तु बना दिया है। और उसे वस्तु बनाने में तुमने स्वयं को भी एक वस्तु बना लिया है, क्योंकि यह एक परस्पर समझौता है, मैं तुम्हें मुझे वस्तु बनाने की अनुमति देता हूँ और तुम मुझे तुम्हें वस्तु बनाने की अनुमति दो। मैं तुम्हें मुझे इस्तेमाल करने की अनुमति देता हूँ और तुम मुझे तुम्हें इस्तेमाल करने की। हम एक दूसरे को इस्तेमाल करते हैं। हम दोनों वस्तु बन गए हैं।

इसीलिए दो प्रेमियों को देखें, जब जो अकल्पित नहीं हुए, रोमांस अभी जिंदा है, हनीमून अभी समाप्त नहीं हुआ। आप पाएंगे कि दो व्यक्ति जीवंत हैं, विस्फोट के लिए तैयार, अनजान के विस्फोट के लिए तैयार। और फिर एक

स्वास्थ्यदा है। करुणा क्या है? करुणा प्रेम का शुद्धतम रूप है। काम-वासना

दूसरे का वस्तु की तरह इस्तेमाल करते हैं। यही कारण है कि यौन-संबन्धों में

तुम अपने कमरे पर खरना लगा कर छोड़ दो और वर्षों बाद आओ तो



Article by Osho: "Spiritual development is possible through awareness."  
*Dainik Jagran*, the biggest national Hindi daily.  
 Readership: 16.37 million.

रु

**अंतस और अध्यात्म का**

9 दिसंबर, 2015

किसी से प्रतिस्पर्धा की आव  
अलग हो। अपनी



जीवन-दर्शन

पर चल रहे हो, तब तुम करीब-करीब सोए हुए चल सकते हो। यदि तुम अपने स्वयं के घर वापस आ रहे हो और प्रतिदिन तुम उसी रास्ते से आते हो, तब तुमको सजग होने की आवश्यकता नहीं है। दाएं मुड़ने का समय आता है, तुम मुड़ जाते हो, सजगता रखने की आवश्यकता नहीं है। लेकिन जब भी तुम एक नई दिशा में जा रहे हो, तो तुम्हें प्रत्येक कदम पर सजग होना पड़ेगा।

# सजगता से होगा आत्मिक विकास

**बने-बनाए रास्ते के बजाय नए रास्ते का चयन करने से ही सजगता आती है। यही सजगता दक्षता बन जाती है। इसी से हमारा आंतरिक विकास हो सकता है। ओशो के जन्मदिवस (11 दिसंबर) पर उनका चिंतन...**

के साथ कोई सहानुभूति पाने समाप्त हो जाती हो। यदि तुम वा हो तो तुमको यु सभी आयामों के दिशा में प्रवह लेकिन याद स सहानुभूति नहीं आलोचना मिल लोग सोच सक अधार्मिक हो, निंदा कर सक तुम्हें अनेक ची पलटना भी केवल तभी तुम सकते हो। प्रसन्नता कहीं है कि तुम और खरीद ल प्रसन्नता सच्चे, प्रमाणिक होने के कृत्य फल है। निरी कभी तुम सच्चे तुमको असहज अनुभव होती अनुशासन की हैं, लेकिन नियं

प्रत्येक मनुष्य समस्याओं से भरा हुआ और अप्रसन्न क्यों है? पहली बात, मनुष्य अत्यधिक प्रसन्न हो सकता है, इसकी संभावना है। इसीलिए उसकी अप्रसन्नता है। यह संभावना कि तुम आनंद के शिखर पर पहुंच सकते हो, वही अप्रसन्नता निर्मित करती है। जब तुम्हें लगता है कि तुम एक अंधेरी घाटी में हो और शिखर पर पहुंच सकते हो, यह संभावना और तुलना अप्रसन्नता का कारण है। जो व्यक्ति जितना ग्रहणशील होता है, वह उतना ही अप्रसन्न है। व्यक्ति जितना संवेदनशील है, उतना ही



कह रहा हूँ कि तुमको अपनी अप्रसन्नता रोबोट जैसे, स्वचालित यंत्र हैं।

Article by Osho: "Miracle: an absence of the scientific mind."  
*Prajatantra*, a national Hindi daily.  
 Circulation: 100,000.



ओशो

बढ़ हो सकता है, जैसा ने किमी के साथ पर हमर रखा हो और आँख ठीक हो गई हो, लेकिन फिर वो धमाका नहीं है। क्योंकि पूरी बात अब पता चल गई है। अब पता चल गया है कि कुछ अंधे जो किने मर्दानिक रूप से अंधे होते हैं। वे अंधे नहीं होते, सिर्फ वेदल अंधाई करने वाली हैं। उनको किने खपल होता है अंधे होने का और वह खपल बनाने लगते हैं कि अंधा बन

सकते हैं। वही अंधे में से केवल तीन साँपों में जहर होता है। तीन प्रतिकूल साँपों में। सभान्त्रे प्रतिकूल साँप बिना जहर के होते हैं, लेकिन सभान्त्रे प्रतिकूल साँपों के काटने से अदानी मर जाता है। इसलिए यही कि उनमें जहर है बल्कि इसलिए कि उनमें साँप ने काटा है। साँप के काटने से काम मरता है, साँप ने काटा मुझे, इसलिए ज्यादा मरता है। तो जिस साँप में बिलकुल जहर नहीं है, उससे आपको काटवाकर भी मारा जा सकता है। जब एक चमत्कार हो तो गया। क्योंकि जहर था ही नहीं। कोई कात्वा नहीं मरने का। जब साँप ने काटा था वह इतना महरा है। वह मरुत बन सकता है। जब मंत्र के फिर आपको बचाया भी जा सकता है। कुछ साँप मर रहा है। अंत में मंत्र लेता है। मंत्री मीठी को मंत्री

## चमत्कार: वैज्ञानिक चित्त का अभाव

कि कभी काटा? मैं उसे डाँटूँ, समझाऊँगा, बुझाऊँगा, उसी के द्वारा जहर खानस करवा दूँगा। तो वह डाँटते, डाँटते, वह साँप क्षमा मँगाने लगता, वह गिरने लगता, लौटने लगता। फिर वह साँप, जिस जगह काटा होता अदानी को, उसी जगह मुँह को रखवाते। तब वह अदानी ठीक हो जाता।

कोई उस या सब साँप पाले उनके लड़के को साँप ने काट लिया। ठक बढ़ी मुश्किल में पड़े, क्योंकि वह लड़का मर जाता है। वह लड़का कहता है, इमने मैं न बुझा, क्योंकि मुझे तो सब पता है। साँप पर का ही है। वह भागकर मेरे पास आए, कुछ करिए, नहीं तो लड़का मर जाएगा। मैंने कहा आरका लड़का और साँप के काटने से मरे, तो चमत्कार हो गया। आप तो कितने ही लोगों को साँप के काटने से बचा चुके हो। उसने कहा कि मैं लड़के को न पालेया। क्योंकि उसको सब पता है कि साँप अपने ही घर का है। वह काटता है, वह ले घर का साँप है। वह बुलबुल, इमने काटा है। तो आप पाँच, कुछ करिए, नहीं तो मेरा लड़का मरता है। साँप के जहर से काम लीजें मरते हैं। साँप के काटने से ज्यादा मरते हैं। यह काटा हुआ दिक्कत दे जाता है। यह इतनी दिक्कत दे जाता है कि जिसका हिसाब नहीं। मैंने सुना है कि एक गांव के बाहर एक फकीर रहता था। एक रात उसने देखा कि एक काली छाया गांव में प्रवेश कर रही है। उसने पूछ कि तुम कौन हो। उसने कहा, मैं मौत हूँ और शहर में महापरी फैलने वाली है। इसलिए मैं जा रही हूँ। एक हजार आदमी मरने हैं, बहुत काम है। मैं रुक न सकूँगी। महीने भर में शहर में दस हजार आदमी या पा। फकीर ने सोचा दर हो गई बहुत, मौत खुद ही खुद बोल रही है। हम तो सोचते थे कि आदमी ही बेईमान है, ये तो देखो मौत भी बेईमान हो गई। कदा एक बच्चा और मार दिए दस हजार। मौत जब एक महीने बाद आई तो फकीर ने पूछ कि तुम तो कहती थी एक हजार आदमी ही मारने हैं। दस हजार आदमी मर चुके हैं और अभी मरने हो जा रहे हैं। मौत ने कहा, मैं तो एक हजार हो गये हैं। वो हजार तो घबराकर मर गए हैं। मैं तो आज जा रही हूँ और कौन से जो लोग मरने उनमें मेरे कोई संबंध नहीं होता और देखना अभी तो शक्य इतने हो गये जितने के शक्य मर जाते। जब मर जा रहे हैं।

हर आदमी को अंदर विचार की तरफें मौजूद हैं, वह पकड़ी जा रही हैं, लेकिन इसका विज्ञान अभी बहुत साफ व होने की वजह से कुछ मदारी इसका उपयोग कर रहे हैं। जिनको यह तरकीब पता है वह कुछ उपयोग कर रहे हैं। इन सारी की सारी बातों में कोई चमत्कार नहीं है। व चमत्कार कभी पृथ्वी पर हुआ। व कभी होगा। चमत्कार सिर्फ एक है कि अज्ञान है, उस और कोई चमत्कार नहीं है।

लोग लकवा जा जते हैं। पैरालिसिस पैरे में नहीं होता। पैरालिसिस डिग्न में होता है। सार प्रीतिता। मैंने सुना है एक घर में दो वर्ष से एक आदमी लकवे में परेशान है, उठ नहीं सकता है, न शिल ही सकता है। सवाल ही नहीं है उनमें का, कुछ गया है। एक रात अचानक रात, घर में अलग लग गया। सोने सोच कर के बाहर पहुँच गए पर प्रमुख तो घर के भीतर ही रह गया। पर उन्होंने क्या देखा कि प्रमुख तो भागे चले आ रहे हैं। वह तो बिलकुल चमत्कार हो गया। अब की बात तो पूरा हो गए, देखा ये तो गजब हो गया। जिसको दो साल से लकवा साथ हुआ था। वह थका चला आ रहा है। अरे अब चल कैसे सकते हैं और वह नहीं बचपन फिर गया। मैं चल ही नहीं सकता। अभी लकवे के मरीजों पर रोकटो प्रयोग किए गए। लकवे के मरीज को हिपेटोटाइज करके, मेडिट करके चलवाया जा सकता है और वह चलता है, तो उनका शरीर तो कोई मजबूत नहीं करता। बेहोशी में चलता है और होश में नहीं चलता। चलता है, चाहे बेहोशी में ही कभी न चलता हो एक बात का तो समझ है कि उसके अंगों में कोई खराबी नहीं है। क्योंकि बेहोशी में अंग कैसे काम कर रहे हैं, अगर खराब हो। लेकिन होश में आकर वह फिर चलता है। तो इतना गजब हो गया है।

जब है? अब फलों साँप से आ रहे हैं। बस आप चमत्कार हो गए। दर हो गई। कैसे पता चलता है, मेरा नाम, मेरा घर? क्योंकि टेलीफोन अंधे अविज्ञान विज्ञान है। बुनियादी सूत्र प्रगट हो चुके हैं। अभी दुमों के मन के विचार को पढ़ने का विज्ञान भी-परि विज्ञान हो रहा है और साफ हुई आ रही है। उसका समुद्र है, कुछ लेना देना नहीं है। कोई भी यह समझा, कल जब साँप हो जाएगी, कोई भी पढ़ सकेगा। अभी भी काम हुआ है और दुमों के विचार को पढ़ने में बड़ी अज्ञानी हो गई हैं। खेती भी तरकीब अपनाकर बना है। अब भी पढ़ सकते हैं। एक-दो-चार दिन प्रयोग करें। तो आपकी पता चल जाएगा, और आप पढ़ सकते हैं, लेकिन जब आप खोल देखेंगे तो आप समझेंगे कि थोड़ा चमत्कार हो रहा है। एक छोटे बच्चे को लेकर बैठ जाते। रात अंधे कर ले। कभी मैं। उसको दूर कोने में बैठा ले। आप यहाँ बैठ जाते और उस बच्चे से कह दें कि हमारी एक ध्यान रख और सुनने की कोशिश कर, हम कुछ न कुछ काटने की कोशिश कर रहे हैं। अपने मन में एक ही शब्द ले लें और उसको जोर से दोहराएँ। अंदर ही दोहराएँ, गुलाब, गुलाब, जोर से दोहराएँ, गुलाब, गुलाब, गुलाब... दोहराएँ आवाज में नहीं मन में जोर से। आप देखेंगे कि तीन दिन में बच्चे ने पकड़ना शुरू कर दिया। वह चारों दिनों का। क्या आप गुलाब कह रहे हैं। अब आपकी पता चलेगी कि वह क्या हो गई। जब आप भीतर और से गुलाब दोहराते हैं तो दुमों तक उसकी विचार तर्जि पहुँचने शुरू हो जाती हैं। बस यह जरा सा नियंत्रित होने की कला सीखने की बात है। बच्चे नियंत्रित हैं। फिर हमसे उठत की किया जा सकता है। बच्चे को कोई कि वह एक शब्द मन में दोहराएँ और आप उस शब्द ध्यान रखकर, बैठकर पकड़ने की कोशिश करेंगे। बच्चा तीन दिन में पकड़ा है तो आप छह दिन में पकड़ा सकते हैं कि 'वह क्या दोहरा रहा है और जब एक शब्द पकड़ा जा सकता है। तो फिर कुछ भी पकड़ा जा सकता है। हर आदमी के अंदर विचार की तरफें मौजूद हैं, वह पकड़ी जा रही हैं, लेकिन इसका विज्ञान अभी बहुत साफ व होने की वजह से कुछ मदारी इसका उपयोग कर रहे हैं। जिनको यह लकवी बन है वह काम समझने को मारते हैं। फिर वह आदमी विज्ञान में

Article by Osho.

*The Pioneer*, a national English daily.

Circulation: 190,939 and readership is about: 500,000.



## Be on your own

**While in a mess, try to remain calm, silent and alert, says OSHO**

**M**an is a crowd, a crowd of many voices — relevant, irrelevant, consistent, inconsistent — each voice pulling in its own way; all the voices pulling man apart. Ordinarily man is a mess, virtually a kind of madness. You somehow manage to look sane. Deep down layers and layers of insanity are boiling within you. They can erupt any moment, your control can be lost any moment, because your control is enforced from without.

For social, economic and political reasons, you have

third floor is that of the adult. All three exist together. This is your inner triangle and conflict. Your child says one thing, your parent says something else, your adult, rational mind says something else.

The child says enjoy. For the child this moment is the only moment; he has no other considerations. He has no values and he has no mindfulness, no awareness. The child consists of felt concepts; he lives through feeling. His whole being is irrational.

Of course he comes into

trouble. You will never be satisfied with it. Only one part will be satisfied, the other two parts will be very much dissatisfied. Whatever you do, reaction can never satisfy you, because reaction is partial.

Response — response is total. Then you don't function from any triangle, you don't choose; you simply remain in a choiceless awareness. You remain centered. And out of that centering you act, whatsoever it is. It is neither child nor parent nor adult. You have gone beyond PAC. It is you



Article by Osho: "Aloneness is the blossoming of the lotus in the heart."  
*Navbharat Times*, a Hindi national daily.  
 Readership of about: 2.27 million.

## एकांत यानी हृदय में प्रेम के कमल का खिलना

ओशो ॥

प्रेम हमेशा एकांत लाता है। अकेलापन नकारात्मक दशा है। अकेलेपन का मतलब है कि तुम किसी दूसरे की लालसा रखते हो। अकेलेपन का मतलब है कि तुम अंधेरे में, उदासी में, विषाद में हो। अकेलेपन का मतलब है कि तुम भयभीत हो, खुद को अलग छूट गया महसूस करते हो। अकेलेपन का मतलब है कि किसी को तुम्हारी जरूरत नहीं है। यह पीड़ा देता है। लेकिन एकांत फूल की तरह होता है। यह अलग ही बात है।

दुनिया अकेले लोगों से भरी है और अपने अकेलेपन के कारण वे सब तरह की मूर्खताएं किए चले जाते हैं, ताकि किसी तरह से वह धाव, वह खालीपन, वह निर्जनता, वह नकारात्मकता भर जाए। किसी दूसरी बीमारी की तुलना में बहुत अधिक लोग अकेलेपन के कारण मरते हैं। लोग दूसरों से संबंधित हुए चले जाते हैं, लेकिन वे दोनों अकेले हैं, इसलिए रिश्ता संभव नहीं होता। रिश्ता सिर्फ ऊर्जा की प्रचुरता से संभव होता है, न कि

जरूरत से। यदि एक व्यक्ति जरूरतमंद है और दूसरा भी जरूरतमंद है, तब दोनों एक-दूसरे का शोषण करने की कोशिश करेंगे। वह शोषण का रिश्ता होगा, न कि प्रेम का। यह मित्रता नहीं होगी, एक तरह की शत्रुता होगी, बहुत कड़वी, लेकिन शक्कर चढ़ी हुई। और देर-सबेर शक्कर उतर जाती है। हनीमून के पूरा होते-होते शक्कर जा चुकी होती है और सब कड़वा बचा होता है। अब वे फंस गए।

पहले वे अकेले ही अकेलापन महसूस करते थे, अब साथ-साथ महसूस करते हैं, जो और भी अधिक कष्ट देता है। जरा देखो पति और पत्नी कमरे में बैठे हुए, दोनों की दुनिया अलग, सपने अलग, भावनाएं अलग-दोनों अकेले। सतह पर साथ, गहरे में अकेले। पति अपने स्वयं के अकेलेपन में खोया, पत्नी अपने स्वयं के अकेलेपन में खोई-दुनिया की सबसे अधिक दुखदायी चीज।

एकांत पूरी अलग ही बात है। एकांत तुम्हारे हृदय में कमल का खिलना है। यह स्वयं के होने का आनंद है। यह अपने आकाश में होने का आनंद है। जब तुम प्रेम में होते हो, एकांत महसूस करते हो। एकांत सुंदर है, एकांत आनंद है। लेकिन सिर्फ प्रेमी इसे महसूस कर सकते हैं, क्योंकि सिर्फ प्रेम अकेले होने का साहस देता है, सिर्फ प्रेम अकेले होने का संदर्भ पैदा करता है। सिर्फ प्रेम इतनी गहनता से तृप्त करता है कि किसी दूसरे की जरूरत नहीं होती-तुम अकेले हो सकते हो। प्रेम इतना केंद्रित कर देता है कि तुम अकेले में भी आनंदित हो सकते हो।

अच्छा है कि इसे समझो, क्योंकि यदि प्रेमी एक-दूसरे के स्पेस को खाली छोड़ने की जरूरत को नही स्वीकारेंगे, तो प्रेम नष्ट हो जाएगा। एकांत से प्रेम नई ऊर्जा पाता है, ताजा रस। जब तुम अकेले

हो, उस बिंदु तक ऊर्जा इकट्ठी करते हो, जहां से यह प्रवाहित हो जाए। अकेले में तुम ऊर्जा इकट्ठी करते हो।

जब तुम प्रेम में होते हो, अकेले होने की बहुत बड़ी जरूरत महसूस होती है। और तब अपने भीतर एकत्र हो रही ऊर्जा, पैदा हो रहे आनंद को बांटने की इच्छा पैदा होती है। प्रेमी करीब आते हैं और दूर जाते हैं-वहां एक लयबद्धता है। दूर जाना प्रेम के विपरीत नहीं है, बस फिर से एकांत को पाने की तैयारी है। लेकिन जब तुम आनंद से भरे हो, बांटने की तीव्र आवश्यकता पैदा होती है। आनंद तुम से बड़ा है, भीतर समा नहीं सकता। यह बाढ़ है! तुम इसे भीतर बांध नहीं सकते, तुम्हें उसे लोगों को बांटने के लिए खोजना ही होगा। प्रेम और अकेलेपन के बीच का नाता देखो। दोनों का आनंद लो।

दोनों में से एक को कभी मत चुनो, क्योंकि यदि एक को चुनते हो, तो दोनों मर जाते हैं। दोनों को घटने दो। जब एकांत घटे इसमें चले जाओ, जब प्रेम घटे, इसमें चले जाओ।

(सौजन्य ओशो इंटरनेशनल फाउंडेशन)



THE  
SPEAKING  
TREE

और पढ़ने के लिए देखें  
[www.speakingtree.nbt.in](http://www.speakingtree.nbt.in)



Article about Osho.

*Indian Express*, a national English daily.

Circulation of: 360,000 and readership: 1.8 million.

6

PUNE Newsline | WEDNESDAY | AUGUST 8 | 2012

Talk  
IN THE NEWSThe Indian EXPRESS  
www.indianexpress.com

## Shower Curtain

DEBJANI PAUL

COME August 11 and over 600 people from Tamil Nadu, Andhra Pradesh, Orissa, Gujarat, Bihar and other states, will be seen visiting the famous Osho Meditation Resort in Pune popularly known as Osho Ashram. The reason is the five-day Monsoon Festival, to be held from August 11 to August 15. "It is going to be a much larger affair than the previous years. We have more than twice the number of people coming in for the festival this year," says Amrit Sadhana, a management to team member from the ashram.

The five-day fest has been organised with the aim of relaxing and celebrating the monsoon season. In its fourth year, festival will include ac-

tivities such as live performances by artistes, costume events, Bollywood dances and meditation sessions.

"The festival will combine a lot of life lessons, self-development and entertaining events, to keep everyone interested," says Sadhana.

Talking about the sudden rise in the festival's popularity, says Sadhana, "This time, more than half the visitors are young people and are first-time visitors, while the rest are returning visitors. This might be because we're reaching out to more people now, through the Internet. We have over 80,000 followers on Facebook, and lakhs of people have viewed the videos we have put up on Youtube." She adds that performances by accomplished flautist Bikramjit Singh and renowned

Bigger crowds are expected to throng the Monsoon Festival at the Osho International Meditation Resort this year

Odyssey dancer Asha Nambiar, has added to the excitement quotient of the programme list. The duo will be presenting a combined performance on August 14.

While Singh will be playing his new songs that have influences from the North-East, Bengal and the Middle East, Nambiar and her troupe will perform a fusion of Odyssey and traditional Sufi dance forms. "My music can be classified as World Music and it's



FILE PHOTO

very unpredictable and new. A flute can make innumerable sounds and I have experimented with so many such sounds," says Singh, who has created several flute meditation tracks in the past.

Interestingly, the fest will introduce the participants to new forms of meditation - Golden Light meditation and Darkness meditation, says Sadhana.

While darkness meditation teaches the participants to use darkness to soothe and calm themselves, golden light meditation asks participants to imagine a glow emanating from within and to push the darkness out. "Darkness meditation is inspired by the monsoon, when the skies are dark and there is less light. We have planned a meditation session at night to show people how they can use it to their advantage," explains Sadhana.

Article by Osho.

*Hindustan Times*, one of the leading English newspapers of India.


Circulation about: 1.16 million and a readership about: 3 million.

# Upanishad simplified

**osho**says

In the *Bhagavadgita*, Krishna talks about action without reward. The sage of this Upanishad has used a better word than Krishna, play. As long as there is an expectation of reward an act remains work; otherwise, you will have to describe it as play. So the sage did not say that compassion is his act, he said it is his play. Nowhere in his mind is there any desire for reward. The sage has not set out to fulfil any desire in the future. There is an overflowing of joy within. That joy is trying to spread out and be shared.

For example, a tree has flowered and the fragrance fills the surrounding area: this is play. The tree is not bothered with who is passing



■ Osho talked about Nirvan Upanishad

**IT IS EASIER TO UNDERSTAND  
A FLOWER THAN A MAN –  
WE CANNOT IMAGINE THAT  
A FLOWER CAN BE MAD**

work? After all, it is I who is going to be psychoanalyzed.”

Article by Osho.

*First City*, a leading English magazine.

Circulation about: 300,000 and a readership: 500,000.



DELHI'S CITY MAGAZINE

OCTOBER 2011 ₹50

# FIRST CITY

## people who are afraid of life

**S**ome people commit suicide. What do you have to say about them? Are these people not afraid of death?

They are afraid of death too. But they are more afraid of life than of death. Life seems more painful to them than death; hence they want to finish it. Putting an end to their lives does not mean they find any joy in death, but since life appears worse than death to them, they prefer death. One who is miserable, living



no cause for being unhappy, then who should he be angry at? He obviously becomes filled with bitterness towards the unknown. He says, "The whole mess is because of that unknown one, because of God. Either he does not exist, or he has gone mad."

What I am saying is that our theism and our atheism, our beliefs - all of them are the products of conveniences that suit our conditions.

One who wants to escape from death will inevitably get hold of some belief. Similarly, someone who wishes to die will also grab on to some belief. But neither of them is eager, anxious to know death. There is a vast difference between convenience and truth. Never think too much about convenience. A thought

OSHO

Article by Osho.  
 Asian Age, a national English daily.  
 Circulation: 350,000 and readership: 500,000.

**THE AGE** Mumbai • Wednesday • 3 March 2010 **19**



**In Joe Hill's new novel titled *Horns*, a man finds himself turning into a demon**



**In a new book, Peter Hessler chronicles the effects of China's road network on lives of individuals**



**Geetesh Sharma's *Traces of Indian Culture in Vietnam* was released in New Delhi on Tuesday**

## Books +

# SHUNYA: THE DIVINE SOURCE

**extract** Osho

*Shunya, the void, is not just symbolic; it is the existence of the divine. A true and experienced yoga is the sanniyasin's temple. Without knowing the self, there is no immortality. The original brahman is self-illumination. The anantah mantra is the sanniyasin's gayatri; freedom from mind's impurities is his aim. Cessation of the mind is his cloth carry-bag. Shunya, the void, is not just symbolic; it is the existence of the divine.*

**WHOSOEVER HAS** known the divine has described it either as purna, wholeness, fullness, completeness, or as shunya, the void, emptiness, nothingness. There are only two ways to indicate towards the divine: either we can say it is fullness, the whole, or we can say it is nothingness. These two words seem to be opposed to each other. What can be more opposite than wholeness and nothingness? Those who do not know the divine but believe in the idea of the divine as fullness or wholeness oppose the idea that the divine is nothingness. Those who do not know but believe the idea that the divine is nothing-

**You can describe a glass as being half full or half empty. The statements appear to oppose each other, and those who have not seen the glass can argue about which statement is right. You say it is half full, I say it is half empty — the words full and empty are definitely opposites.**

path of *purna*, of fullness. It will depend upon the individual on which path he prefers to move. You can describe a glass as being half full or half empty. The statements appear to oppose each other, and those who have not seen the glass can argue about which statement is right. You say it is half full, I say it is half empty — the words full and empty are definitely opposites. But those who have seen the glass will say that these are two ways of describing the same thing — a glass filled to the halfway-mark. When we want to talk about the divine we will either have to describe it in superlative terms, as "the ultimate," or we will have to

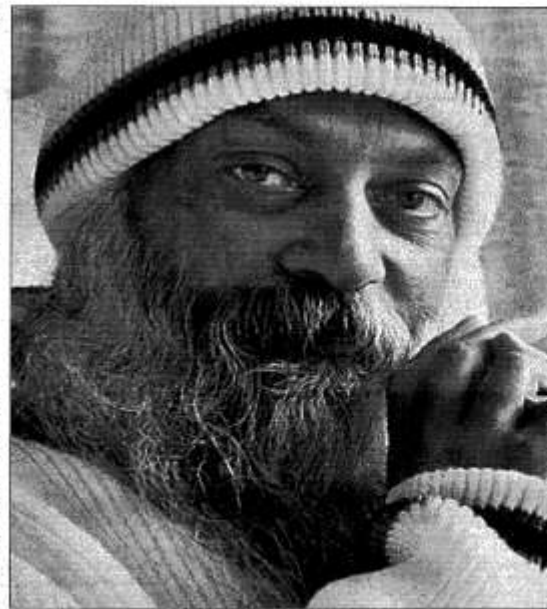
will have to use the same words that you have already used and known. This is why Buddha used to say, "I will remain silent. Do not compel me to say anything about truth." If somebody pressed him very hard he would just say, "It is *shunya*, nothingness." When you hear someone describe the divine as nothingness, you understand him to be saying that it does not exist. But if someone wants to say that there is no divine he will not use the word *shunya*; he can say directly that, "There is no divine". What is the difficulty in saying that something does not exist, that it is not? Perhaps it is difficult to give expressions to something that exists, but it is easy to say something about that which is not. But Buddha says, "It is *shunya*" — he does not deny its existence; it is, but he says it is *shunya*. His reason for calling it *shunya* is so that the conception of your mind, the categories created by the intellect and your assumptions can be dropped; only then can you move towards the divine. Calling the divine *shunya* means that only those who are ready to become *shunya*, zero, will be able to know it. When you have also become a *shunya* then you will be able to know it, because you



**BEHIND A THOUSAND NAMES: TALKS ON THE NIRVAN UPANISHAD**

By Osho  
 Full Circle  
 pp. 417, Rs 295

within. If someone describes the divine as wholeness, you can still imagine some greater wholeness. Howsoever full a thing is, there is no barrier to its being more full. In *purna*, wholeness, there is the possibility of "something more". But as far as *shunya* is concerned, there is no possibility of something being "more *shunya*". When someone says that truth is *shunya*, it is the ultimate that can be said. Two *shunyas* cannot be smaller or bigger. *Shunya* means *shunya*; there is nothing



But if God is the negative pole, then from where will the positive pole come? — you will have to conceive another God! This is the reason why some religions have conceived a Devil along with their God. The Devil is "God number two," the bad one, the other polarity. But the Devil must be there, you cannot deny this polarity. Man has realised that existence is dual: if God is good, then the bad must also be allowed its existence. India is the only country that has not created any opposite entity to God. Christians, Mohammedans, Jews and Zoroastrians have all created a Devil. Only in India have some people accepted the possibility of a God without a separate Devil. To have to create a separate Devil is not much of an acceptance of God, because then there is constant conflict, and it is never-ending. I have heard: Mulla Nasrudin was on his deathbed. The *mufti* was present to hear his last confession and bear witness to Mulla's final repentance. The priest told Mulla, "Now the time of death is near; repent, ask forgiveness from God and deny Satan!" Mulla remained silent. The *mufti* asked Mulla, "Have you heard what I have said? In these last moments you should not hesitate" — because Mulla



Article by Osho: "Search for the soul."  
 Rashtriya Sahara, a national Hindi daily.  
 Circulation: 294,758 and readership: 500,000



हिंदुस्तान की जवानी तमाशाबीन है। हम देखते रहते हैं खड़े होकर, जीवन का जैसे कोई जुलूस जा रहा है। रुके हैं, देख रहे हैं; कुछ भी हो रहा है। सारे मुल्क में कुछ भी हो रहा है। शोषण हो रहा है, जवान खड़ा हुआ देख रहा है। अन्याय हो रहा है, जवान खड़ा हुआ देख रहा है। बुद्धिहीन लोग देश को नेतृत्व दे रहे हैं, जवान खड़ा हुआ देख रहा है। जड़ता धर्मगुरु बन बंठी है, जवान खड़ा हुआ देख रहा है। सारे मुल्क के हितों को नष्ट किया जा रहा है और जवान खड़ा हुआ देख रहा है। यह कैसी जवानी है!

## आत्मा की खोज- ओशो

जवानी स्पेक्टेटर नहीं है, जवानी तमाशाबीन नहीं है कि तमाशा देख रही है, खड़ी होकर। जवानी का मतलब है जीना, तमाशागिरी नहीं। जवानी का मतलब है न्यूनता। जवानी का मतलब है- सम्मिलित होना। खड़े होकर रास्ते के किनारे अगर देखते हो जवानी की यात्रा को, जीवन की यात्रा को, तो तुम तमाशाबीन हो, तुम जवान नहीं हो, पसिव अनुसर, निष्क्रिय देखने वाले। निष्क्रिय देखने वाला आदमी जवान नहीं हो सकता। जवान सम्मिलित होता है, जीवन में।

और जिस आदमी को सौंदर्य से प्रेम है, जिस आदमी को जीवन के रस और आनंद से प्रेम है, जिस आदमी को जीवन का आह्लाद है, वह जीवन को आह्लादित बनाने के लिए श्रम करता है, सुंदर बनाने के लिए श्रम करता है। वह जीवन की कुरूपता से लड़ता है, वह जीवन को कुरूप करने वालों के खिलाफ विद्रोह करता है। कितनी अम्लीयता है। कितनी कुरूपता है, समाज में और जिवगी में। अगर तुम्हें प्रेम है सौंदर्य से, तो एक युवक एक सुंदर लड़की की तस्वीर लेकर बैठ जाए और पूजा करने लगे, एक युवती एक सुंदर युवक की तस्वीर लेकर बैठ जाए और कविताएं करने लगे, इतने से जवानी का काम पूरा नहीं हो जाता। सौंदर्य के प्रेम का मतलब है सौंदर्य को पैदा करो, फिस्ट करो, जिवगी को सुंदर बनाओ। आनंद की उपलब्धि और आनंद की अन्वेषण का उर्व है आनंद को विखराओ। फूलों को चाहते हो तो फूलों को पैदा करने की चेष्टा में संलग्न हो जाओ। जिस तुम चाहते हो जिवगी को वैसा जिवगी को बनाओ। जवानी मांग करती है कि तुम कुछ करो, खड़े होकर देखने

लड़की से। और तुम मजे से मन में गिनती करोगे कि दस हजार में स्कूटर खरीदें कि क्या करें? तुम जवान हो? ऐसी जवानी दो कौड़ी की जवानी है। जिस लड़की को तुमने कभी चाहा नहीं, जिस लड़की को तुमने कभी प्रेम नहीं किया, जिस लड़के को तुमने कभी नहीं चाहा और जिस लड़के को तुमने कभी चुआ नहीं, उस लड़के से विवाह करने के लिए या उस लड़की से विवाह करने के लिए तुम पैसे के लिए राजी हो रहे हो? समाज की व्यवस्था के लिए राजी हो रहे हो? तो तुम जवान नहीं हो। तुम्हारी जिवगी में कभी भी वे फूल नहीं खिलेंगे, जो युवा मस्तिष्क जानता है। तुम कभी उन अवकाश को नहीं चुओगे, जो युवा मस्तिष्क पूछता है। तुम हो ही नहीं; तुम मिट्टी के लौटे हो, जिसको कहीं

के लिए होता है, संघर्ष जब जीवन के लिए होता है, सब जवानी सुंदर, स्वस्थ, सत्य होती चली जाती है।

हम जिसके लिए लड़ते हैं, वही हम हो जाते हैं। इसे ध्यान में रख लेना, हम जिसके लिए लड़ते हैं, अंततः हम वही हो जाते हैं। लड़ो सुंदर के लिए और तुम सुंदर हो जाओगे। लड़ो सत्य के लिए, और तुम सत्य हो जाओगे। लड़ो श्रेष्ठ के लिए और तुम श्रेष्ठ हो जाओगे। और मत लड़ो-तुम खड़े-खड़े सड़ोगे और मर जाओगे और कुछ भी नहीं होओगे। जिवगी संघर्ष है और जिवगी संघर्ष से ही पैदा होती है। फिर जैसा हम संघर्ष करते हैं, हम वैसा ही हो जाते हैं।

हिंदुस्तान में कोई लड़ाई नहीं है, कोई फाइट नहीं है। हिंदुस्तान के मन में कोई भी लड़ाई नहीं है। सब कुछ हो रहा है, अजीब हो रहा है। हम सब जानते हैं, देखते हैं-सब हो रहा है। और होने दे रहे हैं। अगर हिंदुस्तान की जवानी खड़ी हो जाए तो हिंदुस्तान में फिर ये सब मासमशियां नहीं हो सकतीं, जो हो रही हैं। एक आवाज में टूट जाएगी। वृत्तिक जवान नहीं है इसलिए कुछ भी हो रहा है।

तो मैं यह दूसरी बात कहता हूँ लड़ाई के मौके खोजना-सत्य के लिए, सच्चाई के लिए, ईमानदारी के लिए। अगर अभी नहीं लड़ सकोगे तो बुढ़ापे में कभी नहीं लड़ सकोगे। अभी तो मौका है कि लड़कन है, अभी मौका है कि शक्ति है, अभी मौका है कि अनुभव ने तुम्हें वेदियान नहीं बनाया है। अभी तुम निर्दोश हो, अभी तुम लड़ सकते हो, अभी तुम्हारे भीतर आवाज उठ सकती है कि यह गलत है। जैसे-जैसे उम्र बढ़ेगी, अनुभव बढ़ेगा, घालतकी बढ़ेगी।



Article by Osho: "Buddha is the first psychologist of the world."  
*Amar Ujala*, a national Hindi daily.  
 Circulation: 2,490,639 and readership: 5.5 million.

# दुनिया के पहले मनोवैज्ञानिक बुद्ध



**बुद्ध पूर्णिमा**

**ओशो**

**गौ** तम बुद्ध दार्शनिक नहीं है। मेटाफिजिक्स और परलोक के प्रश्नों में उनकी जरा सी भी-रुचि नहीं है। उनकी रुचि है, मनुष्य के मनोविज्ञान में। उनकी रुचि है, मनुष्य के रोग और मनुष्य के उपचार में। महात्मा बुद्ध ने जगत को एक उपचार का शास्त्र दिया है। इसलिए बुद्ध को समझने में यह ध्यान रखना कि सिद्धांत या सिद्धांतों के आसपास तर्कों का जाल उन्होंने जरा भी खड़ा नहीं किया है। उन्हें कुछ सिद्ध नहीं करना है। न तो परमात्मा को सिद्ध करना है, न परलोक को सिद्ध करना है। उन्हें तो आविष्कृत करना है, निदान करना है। मनुष्य का रोग कहाँ है? मनुष्य का रोग क्या है? मनुष्य दुखी क्यों है? यही बुद्ध के मौलिक प्रश्न हैं। परमात्मा है या नहीं, संसार किसने बनाया, नहीं बनाया, आत्मा मरने के बाद बचती है या नहीं, निर्गुण है परमात्मा या सगुण, इस तरह की बातों को उन्होंने व्यर्थ कहा है। इस तरह की बातों को उन्होंने आदमी की चालाकी कहा है। ये जीवन के असली सवाल से बचने के उपाय हैं। ये कोई सवाल नहीं हैं। इनके हल होने से कुछ हल नहीं होता। परलोक है या नहीं, इससे तुम नहीं बदलते। और बुद्ध कहते हैं, जब तक तुम न बदल जाओ, तब

वहाँ इकट्ठा थे, उन्होंने कहा, यह सवाल तुम पीछे पूछ लेना। पहले तीर निकाल लेने दो, अन्यथा पूछने वाला मरने के करीब है। बुद्ध कहते, ऐसी ही दशा में मैं तुम्हें पाता हूँ। और तुम पूछते हो कि संसार किसने बनाया? पहले इसका पता चल जाए, तब करेंगे ध्यान। क्यों बनाया? पहले इसका पता चल जाए, तब बदलेंगे जीवन को। बुद्ध कहते हैं, जीवन का तीर छाती में चुभा है। पल-पल मर रहे हो। किसी भी क्षण डूब जाओगे।



परमात्मा की धारणा के बिना कोई धर्म हो सकता है? कहीं आत्मा की धारणा के बिना कोई धर्म हो सकता है? तत्व के विषय में तो बुद्ध ने बात ही नहीं की। तथ्य की बात की। उन जैसा यथार्थवादी खोजना मुश्किल है। और उन्होंने मनुष्य की असली तकलीफ को पकड़ा और कहा कि यह तकलीफ सुलझ सकती है।

गौतम बुद्ध ने चार आर्य-सत्यों की घोषणा की कि मनुष्य दुखी है। इसमें किसको संदेह होगा? इसका कौन विरोध करेगा? मनुष्य दुखी है। मनुष्य के दुख का कारण है। ठीक बुद्ध वैसा ही बोलते हैं, जैसे वैज्ञानिक बोलता है। दुख का कारण है, क्योंकि अकारण कैसे दुख होगा? पैर में पीड़ा हो, तो कांटा लगा होगा। सिर दुखता हो, तो कारण होगा। पीड़ा है, तो अकारण कैसे होगी? पीड़ा का कारण है।

तो बुद्ध ने कहा है, पहला आर्य-सत्य कि मनुष्य दुख में है। दूसरा आर्य-सत्य कि दुख का कारण है। और तीसरा आर्य-सत्य कि दुख के कारण को मिटाया जा सकता है। और चौथा आर्य-सत्य कि एक ऐसी भी दशा है, जब दुख नहीं रह जाता। बुद्ध ने यह कभी नहीं कहा कि वहाँ आनंद होगा, क्योंकि वह कहते हैं, व्यर्थ की बातें क्यों करना? इतना ही कहा, वहाँ दुख नहीं होगा। आनंद को तुम समझोगे कैसे? आनंद तुमने जाना नहीं। वह शब्द धोधा है, अर्थहीन है। तुम उसमें जो अर्थ डालोगे, वह वही होगा, जो तुमने जाना है। तुम अपने सुख को ही

Article by Osho.

*Deccan Chronicle*, an English language daily.

Circulation about: 350,000 and a readership: 500,000.



Article about Osho.

*Maharashtra Herald*, statewide English language newspaper.

Readership about: 300,000.



## Osho moves a new nation

Osho International resort, Koregaon Park, resembled Korea last week, when 70 Koreans visited the ashram. The enthusiastic group lead by Godowon, the CEO of Godowon company in Korea, expressed how much he enjoyed his stay at the ashram and dreams of opening a place like this in Korea and wants to cherish

every moment he experienced in this city. It was great watching the Koreans dressed in Maroon robes dancing during the dance meditation session. During the tour they will travel to different cities like Mumbai, Cochin and many other cities and try to understand the culture and beauty of the places.



MH Photos

Report of Osho Book Exhibition: "Osho literature is available in MP3 at affordable prices."

*Dainik Bhaskar*, a Hindi, Marathi and Gujarathi daily.

Circulation about 4.5 million.

**प्रदर्शनी** यूथ से लेकर बुजुर्ग तक दिखा रहे हैं ओशो की किताबें खरीदने में रुचि

## ओशो का लिट्रेचर 'एमपी थ्री' में और सस्ता



**भारत न्यूज . चंडीगढ़**

एक ही जगह पर दो सुविधाएं। एक तो लोग अपना मन पसंदीदा ड्रेस मेटैरियल व अन्य शॉपिंग कर सकते हैं, वहीं उन्हें ओशो का लिट्रेचर खरीदने का मौका भी मिलता है। लाजपतराय भवन-15 में इन दिनों ओशो की बुक एग्जीबिशन लगाई गई है। इस एग्जीबिशन में यूथ से लेकर बुजुर्ग किताबें खरीदने में रुचि दिखा रहे हैं।

**11 दिन लमती है एग्जीबिशन**

भवन में हर महीने 1 से 11 तारीख तक ओशो की बुक एग्जीबिशन लगाई जाती है। इसमें चंडीगढ़ से ही नहीं, बल्कि दूसरे राज्यों से भी ग्राहक किताबें खरीदने आते हैं।

**एमपी थ्री आने से हुआ फायदा**

ओशो का लिट्रेचर एमपी थ्री में आने से ग्राहकों को अधिक फायदा हुआ है। पहले लिट्रेचर खरीदने के लिए अधिक रुपए खर्च करने पड़ते थे, अब कम दामों में एमपी थ्री आने लगी है।

**पॉकेट बुक्स भी प्रदर्शनी में**

यहां पॉकेट बुक्स भी प्रदर्शित की गई हैं। इसमें प्रेम और विवाह, शांति के उपाय, यौवन और

चुनौती, मेरा सपना मेरा भारत और अन्य बुक्स शामिल हैं। ओशो के लगभग 350 टाइटल प्रदर्शनी में रखे गए हैं।

**दो बुक्स की खास डिमांड**

'संभोग से समाधि की ओर' और 'एक ओंकार सतनाम' बुक की सबसे अधिक बिक्री हो रही है। स्वामी अखिलेश सरस्वती ने बताया कि एक ओंकार सतनाम बुक को कई लोग खरीदते हैं। उन्होंने बताया कि प्रतिदिन 50-60 ग्राहक आते हैं, जो ओशो का लिट्रेचर खरीदते हैं।

**शांति मिलती है पढ़कर**

लाजपतराय भवन की एग्जीबिशन में संतोष व्हाइट मेटल के क्राफ्ट की स्टॉल लगाती है। उन्होंने बताया कि बुक एग्जीबिशन से ओशो की बुक्स खरीदी और अब तक तीन बुक्स पढ़ चुकी हैं। संतोष कहती है कि इनकी बुक्स को पढ़कर शांति मिलती है।

सेक्टर-48सी से बुक की खरीदारी करने आईं बर्किंग वुमन अरुणा ने बताया कि चैनल में ओशो के प्रवचन सुनकर उनकी ओशो के लिट्रेचर को पढ़ने के प्रति रुचि जागी। अरुणा का कहना है कि ओशो की विचारधारा सिंपल जीवन जीने के लिए प्रेरित करती है। उनके साहित्य को पढ़ने वाले बार बार पढ़ते हैं।

■ लाजपत राय भवन में लगी ओशो की किताबों की एग्जीबिशन। -उपेंद्र सेन

Article about Osho.

*The Times of India*, national English daily.

Circulation: 3,049,920 and readership of close to: 7.6 million .

# Meditation, the Osho way

Various courses at the Centre help the individual achieve a harmonious balance between body and mind

## Amrit Sadhana

**I**t's not common to find a gathering of 104 countries in one location. Puneites are probably unaware that people from places like Iceland, Siberia, Lithuania, Latvia and Alaska are frequenting a place they have known and heard about for years – The Osho International Meditation Resort at Ko-

back is a deeply relaxing meditative “energy-field”.

The Osho Meditation Resort is an AIDS free zone. Anyone who wants to participate in meditation here has to get an AIDS negative certificate at our welcome centre.

Everybody wears a maroon robe here during the daytime and a white one in the evening. Conventionally meditation involves sitting cross-

growth. It encompasses all the current western therapy approaches — the healing arts of East and West, esoteric sciences, creative arts, centering and martial arts, tantra, zen, Sufism and meditative therapies.

There are individual sessions and classes, as well as courses and professional training programmes too. What is unique is the fact that all the methods used — whether relating to the

Article by Osho: "Who is god and who is devil?"  
*Punjab Kesri*, a leading Hindi daily in North India.  
 Circulation: 1,178,138 and readership: 500,000.

# कौन भगवान, कौन शैतान ?

( गतांक से आगे )

**फ़ा** यड का ऐसा खयाल है कि वह जो अचेतन मन है हमारा, वह भगवान से ही नहीं, शैतान से भी जुड़ा होता है। असल में भगवान और शैतान हमारे शब्द हैं। जब किसी चीज को हम पसंद नहीं करते, तो हम कहते हैं, शैतान से जुड़ा है, और किसी चीज को जब हम पसंद करते हैं, तो हम कहते हैं, भगवान से जुड़ा है लेकिन मैं इतना ही कह रहा हूँ कि अज्ञात से जुड़ा है। और मेरे लिए भगवान है। और भगवान में मेरे

लिए शैतान समाविष्ट है, उससे अलग नहीं है।

असल में जो हमें पसंद नहीं है, मन होता है कि वह शैतान ने किया होगा। जो गलत, असंगत नहीं है, वह भगवान ने किया होगा। ऐसा हमने सोच रखा है कि हम केंद्र पर हैं जीवन के, और जो हमारे पसंद पड़ता है, वह भगवान का किया हुआ है, भगवान हमारी सेवा कर रहा



ओशो

है। जो पसंद नहीं पड़ता, वह शैतान का किया हुआ है, शैतान हमसे दुश्मनी कर रहा है। यह मनुष्य का अहंकार है, जिसने शैतान और भगवान को भी अपनी सेवा में लगा रखा है। भगवान के अतिरिक्त कुछ है नहीं। जिसे हम शैतान कहते हैं, वह सिर्फ हमारी अस्वीकृति है। और अगर हम बुरे में भी गहरे देख पाएं, तो फौरन हम पाएंगे कि बुरे में भला छिपा होता है। दुख में भी गहरे देख पाएंगे कि सुख छिपा होता है। अभिशाप में भी गहरे देख पाएं, तो पाएंगे कि वरदान छिपा होता है। असल में बुरा और भला एक

ही सिक्के के दो पहलू हैं। शैतान के खिलाफ जो भगवान है, उसे मैं अज्ञात नहीं कह रहा, मैं अज्ञात उसे कह रहा हूँ, जो हम सबके जीवन की भूमि है, जो अस्तित्व का आधार है। उस अस्तित्व के आधार से ही रावण भी निकलता है, उस अस्तित्व के आधार से ही राम भी निकलते हैं। उस अस्तित्व से अंधकार भी निकलता है, उस अस्तित्व से प्रकाश भी निकलता है।

**( क्रमशः )**

गीता दर्शन भाग से उद्धृत  
 / सौजन्य ओशो इंटरनेशनल  
 फाउंडेशन

Article about Osho.

*Seventeen Magazine*, a magazine for teens.

Circulation about: 50,000 and readership: 200,000.



**real life**

**unconventional is the word!**

**the osho experience!**

**Tejas Lodhani**

"I had taken a year off when I was 19—I wanted to explore and experiment with different career options and had a couple of months to myself. I wanted to do something interesting, instead of taking up a usual summer job. That's when I thought of going to the Osho Ashram! I had been there once and was completely taken in by the ambience—the place was beautiful! My dad used to subscribe to the 'Osho Times', that's where I came across something called Work as Meditation. I went to their website to find out more and discovered it was part of a 'Residential Programme' that allowed people to stay at the ashram and work while attending meditation sessions. I applied for it and was really lucky as I managed to get free accommodation at the ashram as well (I only had to pay for meals)! My parents were cool when I told them I was going, although I think they were a bit weary that I would decide to adopt that lifestyle forever!"



Article about Osho: "It is not easy to deny Osho."

*Pravasi Today*, a Hindi tour magazine.

Circulation about: 50,000 and a readership of about: 200,000.

विविधा

आसान नहीं

**ओशो** को

**नकारना**



□ नरेश शांडिल्य



**ओ**शो को आप आसानी से भूलोकार करें या व धरे लेकिन ओशो को आप आसानी से नकार नहीं सकते। न तर्कों के बल पर, न दर्शन के बल पर, न अंधधर्म के बल पर — ओशो को नकारना लगभग नामुमकिन-सा है। आसून तो बिल्कुल नहीं। क्योंकि ओशो कृष्ण को उद्धृत करते हैं, गीता को उद्धृत करते हैं, उपनिषदों को उद्धृत करते हैं, बुद्ध को उद्धृत करते हैं, ऋषियों-मुनियों-संतों-सुधियों को उद्धृत करते हैं — वे एरु को, पलटू को, वायक को, तुलसी को, मीरा को, कबीर को... सबको उद्धृत करते हैं.. आप इन सबको नकार सकते हैं तो ओशो को भी नकार सकते हैं। लेकिन क्या इन सबको नकार जा सकता है?

Article about Osho: "Osho's vision on Education."  
*Sakaal*, a Marathi daily.  
 Circulation: 1.24 million.



## ओशोंच्या शिक्षणविषयक संकल्पना एकाच पुस्तकात

**मुंबई :** ओशोचे शिष्य जगभरात विखुरले आहेत. त्यांच्या शिष्यांनी त्यांचे मार्गदर्शनाचे कार्य पुढे सुरूच ठेवले आहे. ओशो यांचे शिष्य स्वामी आनंद वैराग्य यांनी ओशो यांच्या शिक्षणविषयक संकल्पना एकत्रितपणे एकाच पुस्तकात मांडल्या आहेत. 'ओशोज विहजन ऑन एज्युकेशन' असे या पुस्तकाचे नाव असून त्यामध्ये ओशो यांनी आतापर्यंत वेगवेगळ्या वेळेस मांडलेल्या शिक्षणविषयक संकल्पना आणि मते

समाविष्ट करण्यात आली आहेत.

स्वामी आनंद वैराग्य यांचे जानेवारी २००६ मध्ये निधन झाले. मात्र त्यांच्या शिष्यांनी हे पुस्तक आता प्रकाशित केले आहे. ओशो यांनी क्रमिक अभ्यासक्रमापेक्षा निसर्गाच्या जवळ जाणाऱ्या शिक्षणाला महत्त्व दिले होते. त्याशिवाय पालक-शिक्षक यांनी विद्यार्थी आणि मुले घडविताना काय लक्षात ठेवायला हवे, याबद्दलही मार्गदर्शन या पुस्तकात आहे. ओशो यांच्या या सर्व

संकल्पना आणि भाषणे आनंद वैराग्य यांनी या पुस्तकात एकत्रित केल्या आहेत.

हे पुस्तक मुंबईत प्रकाशित झाले असून लवकरच ते देशभरात उपलब्ध होणार आहे, अशी माहिती देण्यात आली. त्याशिवाय आंतरराष्ट्रीय स्तरावरही हे पुस्तक लवकरच उपलब्ध होणार आहे. इंग्रजी भाषेतील ३३० पानांच्या या पुस्तकाची किंमत २०० रुपये आहे. या पुस्तकाचा हिंदीतही अनुवाद केला जाणार आहे.

Article by Osho: "India should respect labor and work harder."  
Mega Gujarat, a Gujarati language newspaper.  
Circulation: 55,000 and a readership: 200,000.

વેદ્યા સોમ જુજરાત (સુરત) ૫

## હિન્દુસ્તાન શ્રમને આદર આપતું આવ્યું છે, શ્રમને વધુ મહત્વનો ગણે છે

હજારો સાલથી હિન્દુસ્તાન પણ આ તર્કને યોગ્ય માનતું આવ્યું છે. દેશ એવું માને છે કે, શ્રમ કરવો એ ઉંચી કોટીની બાબત છે. પવિત્ર નહેરુએ યોગ્ય વખત ઉપર આરામ 'આરામ હરામ છે' એવું સૂત્ર દેશને આપ્યું હતું. પણ કોઈ ખુટી શકે છે કે, મનુષ્ય આરામ માટે જીવે છે કે કોઈ ચોજ માટે? માણસ શ્રમ પણ એટલા માટે કરે છે કે પોતે ચેતની આરામથી જીવી શકે. મહેનત પણ એટલા માટે કરે છે કે પોતાને વિકાસ મળી શકે. જીવનનું લક્ષ્ય વિકાસ છે, શ્રમ નથી. શ્રમ તો સાધન છે. ભારતે છેલ્લાં પાંચ હજાર વર્ષથી શ્રમને સાધ્ય માન્યું છે, સાધન નહીં. ભારત કહે છે શ્રમ જીવનનું લક્ષ્ય છે. વિનોબા, ગાંધી અને નહેરુ પણ એ જ કહ્યા કરે છે. સાચી વાત તો એ છે કે, જીવનનું લક્ષ્ય વિકાસ છે. આરામ છે. વર્ષો, એ પણ માલ રાખો કે આરામ હરામ નથી, કેમકે જો લક્ષ્ય હરામ હોય તો પુરી જિંદગી હરામ થઈ જવાની. પરંતુ જેને આરામ માલ કરવો છે, તેણે શ્રમ કરવો પડશે. શ્રમ સાધના છે આરામ માલ કરવાનું. તેથી આરામ લક્ષ્યને અવગણી શકાય નહીં. છતાં નવલઈની વાત એ છે કે, હિન્દુસ્તાન શ્રમને આદર આપતું આવ્યું છે. શ્રમને વધુ મહત્વનો ગણે છે.

શ્રમથી સંપત્તિ પેદા થતી નથી. આ વાત તમને કદાચ ઈલેક્ટ્રી લાયટો, કારણ આપણે એમ માનીએ છીએ કે શ્રમથી સંપત્તિ પેદા થાય છે. નહીં, જે કોમ વિકાસ શોધવા-મેળવવા પ્રયત્ન કરતી હોય છે તે પોતાનો શ્રમ ભવવવા, ટેકનોલોજીનો વિકાસ કરવામાં લાગી જાય છે. ટેકનોલોજી શ્રમને બદલે કામ કરનારી ચોજ છે. જો માટે નહારે ત્યાં આવવું હોય તો પગે ચાલીને આવી શકું છું. હું પદયાત્રા કહું તો તમને સારું લાગે. અખભારોમાં પણ એની ખબરો છપાવે, કે હું એક મલાન પદયાત્રી છું. પરંતુ હું આલવાના શ્રમમાંથી અલવા મળવો હોઈ તો પછી માટે સાર્પકલાની શોધ, મોટરગાડીની શોધ કરવી પડે. એટલે જે કોમ શ્રમથી અલવા મળતી હશે તે ટેકનોલોજીના વિકાસમાં મંદી

જશે. પરંતુ જ્યાં શ્રમને મહત્વ અપાય છે ત્યાં ટેકનોલોજી વિકાસ ધામી શકે નહીં. અને ટેકનોલોજી વગર કદી પનસંપત્તી ઉત્પન્ન થાય નહીં. શ્રમ પન પેદા નથી કરતો, ટેકનિક પેદા કરે છે. તેથી જે કોમ કેળા આરામની ઈચ્છા કરતી હોય તેટલા પ્રમાણમાં ટેકનોલોજી વિકાસ કરતી જાય છે. તમને જાણીને નવાઈ લાગશે કે દક્ષિણનો સમગ્ર વિકાસ એ લોકોએ કર્યો છે જેઓ વિકાસની આકાંક્ષા કરતા હોય છે. જગતની સમગ્ર શોધખોળ એ લોકોએ કરી છે જેઓ વિકાસના ભાવે આકાંક્ષી છે. તમે પેલી કહેવત તો સાંભળી હશે કે આવશ્યકતા શોધખોળની માતા છે. આ કહેવત બહુ ખરી નથી. વિકાસની આકાંક્ષા આયિષ્કાર શોધખોળની માતા છે. તેથી જ ભુદિમાન મનુષ્યો ચારે બાજુથી વિકાસની તપાસમાં શોધમાં હોય છે.

તમે કદાચ સાંભળ્યું હશે કે એરિસન એક હજાર નવી શોધો કરી હતી. જગતના કોઈપણ મનુષ્યે આટલી શોધ કરી નથી. એક કારખાનામાં એક સામાન્ય કારકુન તરીકે એણે જિંદગીની શરૂઆત કરી હતી. એને કલ્પ એક જ કામ કરવાનું હતું કે જ્યારે કોઈનો ફોન આવે કે તરત જ રોટને ખજર કરવો. આખી રાત એને જાગવું પડતું હતું. કોઈ રાતે ફોન આવતા અને કોઈ રાતે ન પણ આવતા. છતાં એને જાગતા રહેવું પડતું હતું. તેથી પોતે આખી રાત તુઈ શકે તે માટે એણે એક યુક્તિ શોધી કાઢી. એણે ફોનના મશીન સાથે જોરથી અવાજ કરે એવી ઘંટડી જોડી કાઢી કે

જેથી એની ઊંચ ઉંડી જાય, એ જાગી ઊઠે. અને પછી રોટને ખજર કરી શકે. પાર્સી એ નિરાંતે સુવા લાગ્યો. આમ મહિનાઓ પસાર થયા. પછી એક દિવસ પેલી ઘંટડી બગડી ગઈ. વાજતી બંધ થઈ ગઈ. ફોન આવ્યો પણ એ જાગી શક્યો નહીં. શેક તપાસ કરવા અણખો કે આમ કેમ, ફોન કેમ કોઈ ઉપાદતું નથી, કારણ કે શેકે પોતાની પત્નીને ફોન કર્યું હતો, કંઈક સુંદરો આપવો હતો, આવીને જોયું તો એરિસન નિરાંતે સુઈ રહ્યો હતો. શેકે એને નોકરીમાંથી કાઢી મુક્યો.

(સમ્ભા)



ભારતના સંપત્તિ પ્રશ્નો અને

**ઓશો** ભાગ ૨૩

**ભારત કહે છે શ્રમ જીવનનું લક્ષ્ય છે. વિનોબા, ગાંધી અને નહેરુ પણ એ જ કહ્યા કરે છે**

Article about Osho: "Osho Program, exhibition of Osho books and CD's."  
*Soonyodaya*, a Kannada language newspaper.  
 Circulation about: 30,000 and a readership: 90,000.

## ಓಶೋ ಕಾರ್ಯಕ್ರಮ

ಬೆಂಗಳೂರು, ವಿ.20- ನಗರದಲ್ಲಿ ಇದೇ ಮೊದಲ ಬಾರಿಗೆ ಏಪ್ರಿಲ್ 22ರಿಂದ 24ರವರೆಗೆ ಮೂರು ದಿನಗಳ ಕಾಲ ಇನ್‌ಫೆಂಟಿ ರಸ್ತೆಯಲ್ಲಿರುವ ರಾಜ್ಯ ಆಡಳಿತ ಅಧಿಕಾರಿಗಳ ಅಸೋಸಿಯೇಶನ್‌ನಲ್ಲಿ ಓಶೋ ಕಾರ್ಯಕ್ರಮ ಏರ್ಪಡಿಸಲಾಗಿದೆ.

ಈ ಕಾರ್ಯಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ಸಿಡಿ, ವಿಸಿಡಿ ಹಾಗೂ ಪುಸ್ತಕ ಪ್ರದರ್ಶನ ಮತ್ತು ಮಾರಾಟ, ಧ್ಯಾನಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ವಿಶೇಷ ಕಾರ್ಯಾಗಾರ ನಡೆಸಲಾಗುವುದು ಎಂದು ಓಶೋ ಫೌಂಡೇಶನ್ ಸದಸ್ಯೆ ಅಮೃತ್ ಸಾಧನಾ ಪತ್ರಿಕಾಗೋಷ್ಠಿಯಲ್ಲಿ ತಿಳಿಸಿದರು. ಪುಸ್ತಕ ಪ್ರದರ್ಶನದಲ್ಲಿ ದೇಶದ ಪ್ರತಷ್ಟಿತ ಪ್ರಕಾಶನ ಸಂಸ್ಥೆಗಳಾದ ಸೆಂಟ್ ಮಾನ್ ಪ್ರೆಸ್, ಪೆಂಗ್ವಿನ್, ಪ್ಯೂಬ್ಲಿಷರ್ ಬುಕ್ಸ್, ಫೋಲ್ ಸರ್ಕಲ್, ಜೈಕೋ ಪಬ್ಲಿಷರ್ಸ್ ಭಾಗವಹಿಸಲಿದ್ದಾರೆ.

ಗುರುವಾರ ಸಂಜೆ 6.30ಕ್ಕೆ ಓಶೋ ರಚಿತ 'ಫೆಸ್ಟ್ ಅಂಡ್ ದಿ ಲಾನ್ಸ್‌ಕ್ವೀಡಂ' ಪುಸ್ತಕ ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡಲಾಗುವುದು ಎಂದರು. ಮೂರೂ ದಿನಗಳ ಕಾರ್ಯಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ಭಾಗವಹಿಸುವವರಿಗೆ ಪ್ರವೇಶ ಶುಲ್ಕ 3000 ರೂ. ನಿಗದಿಪಡಿಸಲಾಗಿದೆ. ಆಸಕ್ತರು ಹೆಚ್ಚಿನ ಮಾಹಿತಿಗಾಗಿ ದೂರವಾಣಿ: 9845024835 ಅಥವಾ 23460686 ಸಂಪರ್ಕಿಸಬಹುದು.

A further online selection of international press coverage of Osho.

<http://www.osho.com/read/press>

<http://www.osho.com/read/osho/by-press>